

यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की विषय समूह एवं लिंगगत भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० (श्रीमती) लवलता सिन्धु

एम०एस०सी०, एम०ए०, एम०एड०, पीएच०डी०

एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)

मेरठ कालिज, मेरठ।

सारांश

मानव तथा पृथ्वी के अन्य जीवधारियों के जीवन का उनके चतुर्दिक विद्यमान पर्यावरण के साथ अन्योन्याश्रितता का संबंध रहा है। भौतिक एवं जैविक पर्यावरण के अवयव एक दूसरे के पूरक हैं तथा एक दूसरे के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं। जीव तथा पर्यावरण प्रकृति के एक तन्त्र के रूप में सहसंतुलन के रूप में कार्य करते हैं। यदि प्रकृति की श्रृंखला या किसी अवयव से छेड़छाड़ की जाती है तो परिस्थितिक संतुलन बिगड़ जाता है। वर्तमान विश्व पूँजीवादी होता जा रहा है। पर्यावरण अवनयन तथा उससे जनित विश्वव्यापी पर्यावरणीय संकट का सर्वप्रथम कारण है मनुष्य एक मत के अनुसार औद्योगिक क्रान्ति के पूर्व वायुमण्डल में कार्बन डाई आक्साइड (CO₂) का सान्द्र 280 से 290 ppm था जो 1860 से 1888 के मध्य बढ़कर 350–360 ppm हो गया। कार्बन डाई ऑक्साइड में यही वृद्धि मानवीय कारणों से हुई हैं जिसके परिणाम अब धीरे-धीरे आने लगे हैं। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, विभिन्न प्रकार के रोग, जलस्तर में कमी, हरित गृह प्रभाव वृद्धि आदि। विभिन्न पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं से निपटने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रत्येक में जागरूकता एवं सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करना आवश्यक हो गया है ताकि पृथ्वी पर जीवों का अस्तित्व कायम रह सके।

भूमिका

ग्लोबल वार्मिंग के कारण समुद्र का जलस्तर बढ़ने और हिन्द महासागर में स्थिति द्वीपीय देशों के समक्ष अस्तित्व मिटाने के खतरे से पूरे विश्व को आगाह करने के लिए मालदीव मंत्रिमंडल ने पिछले दिनों समुद्र के अन्दर एक बैठक की। बैठक में एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर का पूरे विश्व में ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने का आह्वान किया गया। मालदीव समुद्र तल से कुछ मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और यदि समुद्र का जल स्तर इसी रफ्तार से बढ़ना जारी रहा तो एक दिन यह द्वीप पानी में समा जाएगा।

इस समय वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन की बहस गंभीर दौर में पहुँच चुकी है। धरती का तापमान प्रति दशक बढ़ता ही जा रहा है और इसी बढ़ते तापमान के साथ-साथ हमारी चुनौतियाँ और चिन्ताएं भी बढ़ती जा रही हैं। तापमान में इस वृद्धि के कारण जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियरों का पिघलना, फसलों की बर्बादी, समुद्री जल स्तर में वृद्धि सहित तमाम जानी-अनजानी समस्याओं की वृद्धि से पूरे विश्व को जूझना पड़ेगा।

जलवायु परिवर्तन की संस्था आईपीसीसी की जारी रिपोर्ट के अनुसार पिछली सदी में तापमान में लगभग 0.6 डिग्री सेंटीग्रेड की वृद्धि हुई थी तथा वर्तमान सदी के अंत तक इसके लगभग 6 डिग्री तक बढ़ जाने की आशंका व्यक्त की गई हैं। वर्तमान में वायुमंडल में कार्बन डाई-आक्साइड का सान्द्रता स्तर 379 पीपीएम है जबकि भविष्य में इसके 550 पीपीएस तक पहुंच जाने की आशंका है। बीसवीं सदी में समुद्र जलस्तर में 17 मिमी की वृद्धि हुई तथा भविष्य में समुद्री जलस्तर में वृद्धि 18 से 59 सेमी होने की संभावना है हम प्रतिदिन 72 मिलियन टन प्रदूषित पदार्थ धरती के वायुमंडल में फँक रहे हैं। समुद्री जलस्तर बढ़ते रहने के कारण आगामी 50 वर्षों में लगभग 150 मिलियन पर्यावरणीय विस्थापितों की समस्या से पूरी दुनिया को जुझना पड़ेगा। हिमालय के ग्लेशियर प्रति वर्ष 18 मी० की दर से सिकुड़ रहे हैं। इन ग्लेशियर से एशिया की प्रमुख 9 नदियों के सुख जाने का खतरा है। यदि धरती के तापमान में मात्र 0.5 डिग्री सेंटीग्रेड से 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड तक की वृद्धि हो तो गेहूँ, मक्का के उत्पाद में 25 प्रतिदिन गिरावट होने की सम्भावना है। इसी रिपोर्ट के अनुसार यदि तापमान 2.3 डिग्री सेंटीग्रेड तक की वृद्धि हुई तो पूरी दुनिया के उत्पाद में लगभग 33 प्रतिशत की गिरावट की आशंका है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

- 1- यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों का विषय समूह भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना करना।
- 2- यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के छात्रों का विषय समूह भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना करना।
- 3- यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के छात्राओं का विषय समूह भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना करना।
- 4- यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों का लिंगगत भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना करना।

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में समस्या के स्वरूप, उद्देश्यों के अनुरूप, शोध प्रतिदर्श चयन, मापन व विश्लेषण को निम्नलिखित दृष्टियों से परिसीमित किया गया है।

- 1- अध्ययन के प्रतिदर्श के रूप में शहर के ही 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- 2- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उच्चतर माध्यमिक स्तर के केवल कक्षा-12 के विद्यार्थियों का अध्ययन हेतु चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध में ऑकड़ों के संकलन के लिए पर्यावरणीय अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। इसके निर्माता डॉ० एन०एन० श्रीवास्तव आचार्य राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान जबलपुर एवं कु० शशिप्रभा दूबे हैं। इसमें सभी प्रश्न कथन के रूप में हैं, जिनकी कुल संख्या-40 है। सभी कथन सकारात्मक हैं। प्रत्येक कथन पर प्रतिक्रिया देने के लिए उसके सामने तीन विकल्प सहमत, अनिश्चित एवं असहमत दिये गये हैं। सहमत, पर निशान लगाने पर 2 अंक, अनिश्चित पर 1 अंक तथा असहमत पर 0 अंक प्रदान किया गया।

शोध का परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन के पश्चात् प्राप्त परिणाम निम्नलिखित हैं—

- 1- यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की विषय समूह भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- 2- यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के छात्रों की विषय समूह भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- 3- यू०पी बोर्ड के 12वीं कक्षा के छात्राओं की विषय समूह भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।
- 4- यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की लिंगगत भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य यू०पी० बोर्ड के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की विषय समूह भिन्नता के आधार पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति की तुलना कर प्राप्त ऑकड़ों का विश्लेषण करने

से यह स्पष्ट होता है कि दोनों विषय समूहों के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है।

व्यवहारिक रूप से देखा जाए तो विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर आना चाहिए, जोकि आया भी है, क्योंकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी पर्यावरण प्रदूषण के लिए उत्तरदायी विज्ञान से सम्बन्धित घटनाओं से ज्यादा परिचित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- 1- शर्मा, आर०ए० (2001) 'पर्यावरण शिक्षा', सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, पृ०-130।
- 2- व्यास, हरिश्चन्द्र (1998) 'पर्यावरण शिक्षा', विद्याविहार प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ०-57।
- 3- सिंह, अरूण कुमार (2006) 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ', मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली, पृ०-268।
- 4- उपाध्याय, राधा बल्लभ (2005) 'पर्यावरण शिक्षा', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ०-1, 117, 125, 135, 137, 138।
- 5- पाण्डेय, कामता प्रसाद (2006) 'शैक्षिक अनुसंधान', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ०-66, 208।
- 6- गोयल, एम०के० (2005) 'पर्यावरण शिक्षा', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ० 271, 272, 276, 286।
- 7- कपिल, एच०के० (2006) 'सांख्यिकी के मूल तत्व', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ०-48।
- 8- सिंह, अरूण कुमार (2003) 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में सांख्यिकी', नोवेल्टी उण्ड कम्पनी, पटना, पृ०-204
- 9- पाण्डेय, के०पी० (2005) 'पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ०-44, 46, 62, 67।
- 10- सहयात्री पत्रिका, अक्टूबर-दिसम्बर, 2006, पृ०-2, 7।